व्यवसायी बनने के योग निर्धारण एवं प्रतिपादन

डॉ. सुशील अग्रवाल

1. परिचय

तीसरी शताब्दी में रचित ग्रन्थ पंचतन्त्रं के मित्रभेदः तन्त्रं, जिसे संस्कृत नीति-कथाओं में सर्वोच्च माना जाता है, ने भी आधुनिक युग में स्वतंत्र व्यवसाय को ही सर्वोत्तम जीविकोर्पाजन का साधन माना है।

हता भिक्षा भेकैर्वितरति नृपो नोचितमहो
कृषिः क्लिष्टा विद्या गुरूविनयवृत्त्यौति विषमा
कुसीदाद्धारिर्द्ध परकरगतग्रन्थिशमनात्
न मन्ये वाणिज्यात्किमपि परमं वर्तनमिह ।।

व्याख्याः भिक्षा में मान कम होता है, नौकरी में राजा उचित तनख्वाह नहीं देता, कृषि में कठिन परिश्रम है, शिक्षा में सदैव मृदु व्यवहार रखना पड़ता है, साहूकारी में व्यक्तिस्वयं गरीब होता जाता है क्योंकि उधार दिया पैसा आसानी से वापिस नहीं आता और व्यवसाय (वाणिज्य) से उत्तम अन्य कोई भी कार्य नहीं है।

वैदिक ज्योतिष के उत्कृष्ट शास्त्रीय सिद्धांतों की मान्यता सर्वविदित एवं सर्वमान्य है और सभी शास्त्रों और विद्वानों ने एकमत होकर इस बात की भी अनुशंसा की है कि फलादेश करते समय देश-काल-पात्र (देश दिक्कालज्ञो) का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

प्राचीन समय में आजीविका के स्रोत सीमित होने के कारण प्राचीन ज्योतिषीय साहित्य में व्यवसायी बनने के सूत्र नहीं मिलते। यत्र-तत्र बिखरे भावों और ग्रहों के कारकत्वों के समन्वय से ही कुछ निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जाता रहा है। वराहमिहिर ने तो केवल चार श्लोकों से ही कर्मजीवाध्याय का समापन कर दिया है जबकि आधुनिक युग में यह अति महत्त्वपूर्ण विषय है। व्यवसायी बनने के ज्योतिषीय सूत्रों की प्राचीन साहित्य में कमी के कारण उत्पन्न कठिनाई और असुविधा के निराकरण हेतु ही इस विषय पर शोध किया गया है।

2. साहित्यिक सर्वेक्षण और परिकल्पना

विस्तृत साहित्यिक सर्वेक्षण और ज्योतिषीय अनुभव के आधार पर शोध-विषय के लिए निम्न परिकल्पनाएं (Hypothesis) निर्धारित की गयीः

घटक	टिप्पणी	
1.	लग्न	लग्न बली होने से जातक में महत्वाकांक्षा और आत्मबल होता है। नवांश लग्न के भी बली होने से यह सम्भावना अधिक प्रबल होती है।
2.	लग्नेश	लग्न सम्बंधित शुभ फलों की प्राप्ति के लिए बली लग्न के अतिरिक्त लग्नेश द्वारा किये किये गए प्रयासों की भी आवश्यकता होती है।
3.	तृतीय	जन्मकुंडली में तृतीय भाव बली होना चाहिए क्योंकि तृतीय भाव साहस, पराक्रम और मेहनत का भाव है। यदि नवांश और दशमांश का तृतीय भाव भी बली हो तो यह सम्भावना और प्रबल होती है।
4.	तृतीयेश	तृतीय भाव के फलों के लिए तृतीयेश बली होना चाहिए। नवांश और दशमांश में भी जन्मकुंडली के तृतीयेश के बली होने से यह सम्भावना अधिक प्रबल होती है।
5.	षष्टम	षष्टम भाव अधीनता का भाव है इसीलिए व्यवसायी बनने के लिए लग्न को षष्ठम भाव से अधिक बली होना चाहिए। अगर नवांश के षष्ठम भाव से भी पुष्टि हो जाय तो सम्भावना अधिक प्रबल होती है।

6.	दशम	आजीविका का मुख्य भाव है। जन्मकुंडली का दशम भाव जितना बली होगा उतनी ही अधिक उन्नति के योग होंगे। जन्मकुंडली के दशम भाव के साथ-साथ नवांश एवं दशमांश के दशम भाव का बली होना आजीविका सम्बंधित प्रगति की पुष्टि करता है। हालांकि, आजीविका सम्बंधित प्रगति व्यवसाय और नौकरी दोनों के लिए है और अच्छी नौकरी में भी यह भाव शुभ होगा।
7.	दशमेश	दशम भाव के साथ-साथ दशमेश के बली होने से प्रयासों के फल सुगमता से प्राप्त होते हैं। दशमेश के बल का आकलन नवांश और दशमांश से भी करना चाहिए।
8.	सूर्य	सूर्य प्रथम भाव एवं दशम भाव के कारक ग्रह हैं। इनका शुभ प्रभावित होकर लग्न/लग्नेश या दशम/दशमेश से सम्बन्ध जातक को व्यवसायी बनने की ओर प्रेरित करता है। नवांश और दशमांश से भी इसके बल की पुष्टि करनी चाहिए।
9.	चन्द्र	चन्द्र मन के साथ-साथ दशम भाव के कारक ग्रह हैं। बली चन्द्र जातक को मानसिक दृढ़ता प्रदान करते हैं। नवांश और दशमांश में भी चन्द्र बल की पुष्टि करनी चाहिए।
10.	मंगल	मंगल तृतीय भाव के कारक ग्रह हैं। मंगल अग्नि तत्व ग्रह होकर साहस, बल और पराक्रम के प्रतीक हैं। इनका शुभ प्रभावित होकर लग्न/लग्नेश या दशम/दशमेश से सम्बन्ध जातक को व्यवसायी बनने की ओर प्रेरित करता है। नवांश और दशमांश में भी इसके बल की पुष्टि करनी चाहिए।
11.	शनि	शनि षष्ठम और दशम दोनों भावों के कारक ग्रह हैं। अर्थात, शनि अधीनता और स्वतंत्रता दोनों ही दे सकते हैं इसीलिए शनि का आकलन बहुत ध्यान से करना चाहिए। शनि अगर वर्गोत्तम हो या कुंडली में बली होकर लग्न/लग्नेश या दशम/दशमेश से सम्बन्ध बनाए, तो जातक को व्यवसायी बनने की तरफ प्रेरित करते हैं। पीड़ित शनि या अगोचरस्थ शनि अधिकतर नौकरी ही करवाते हैं। अगोचरस्थ शनि यदि बली हों तो आजीविका के प्रारम्भ में नौकरी और बाद में व्यवसाय की ओर प्रेरित करते हैं। नवांश और दशमांश में भी शनि के बल की पुष्टि करनी चाहिए।
12.	राहु	राहु यदि शुभ युत/दृष्ट या योगकारक हों तो कुछ अलग करने का साहस देते हैं जिससे व्यवसायी बनने में सहायता होती है। नवांश और दशमांश में भी इसके बल की पुष्टि करनी चाहिए।
13.	धन योग	यदि धन योग अधिक हों तो व्यवसायी बनने के संकेत होते हैं। कम धन योग हों और इंदु लग्न बली तो भी जातक निम्न स्तर से उठकर धन कमा लेता है। पारिवारिक व्यवसाय में अनेकों बार जातक की कुंडली में धनयोगों की कमी भी देखी गयी है।
14.	दशा	आजीविका प्रारम्भ करने के प्रारम्भिक वर्षो में अगर शुभ एवं उपयुक्त दशा आ जाय तो जातक कम बाधाओं के साथ अपना व्यवसाय जमा लेता है। प्रतिकूल दशा कुंडली के योगों को फलीभूत होने का वातावरण प्रदान नहीं करती।

3. विषय क्षेत्र एवं सीमांकन

व्यवसायी बनने के सूत्रों के निर्धारण एवं प्रतिपादन करने के लिए हमने निम्न धारणाओं (assumptions) को स्वीकारा है जो इस विषय का क्षेत्र और सीमांकन भी निर्धारित करती हैं:

1. इस शोध के लिए यह महत्वपूर्ण नहीं है कि व्यवसायियों ने शुरुआत से ही व्यवसाय किया या कुछ समय नौकरी के उपरान्त व्यवसाय में कदम रखा।
2. जन्मकुंडली में योग होने के साथ-साथ उपयुक्त सही दशा एवं गोचर आने पर ही घटना घटित होती है। इस शोध में दशा का आकलन संक्षिप्त ही किया गया है और गोचर का विश्लेषण नहीं किया गया है क्योंकि हमें व्यवसायी बनने के समय का निर्धारण नहीं करना है।
3. षड्बल और अष्टकवर्ग के आधार पर भावबल या

ग्रहबल का आकलन नहीं किया गया है।

4. हमने आंकड़ों में 30 वर्ष की आयु से नीचे के जातक नहीं लिए हैं क्योंकि कुछ लोगों में कुछ वर्ष नौकरी करने के पश्चात् व्यवसायी बनने की संभावना हो सकती है।

5. हमने आंकड़े एकत्रित करने के लिए विभिन्न माध्यमों का सहारा लिया है, जैसे ज्योतिषीय पत्रिकाएं, पुस्तकें, इन्टरनेट, संस्थाएं और मित्र आदि।

6. इस शोध में राजयोग और विपरीत राजयोग का वर्णन एवं विश्लेषण नहीं किया गया है क्योंकि शोधकर्ता के अनुभव के अनुसार राजयोगों का महत्त्व जातक के कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए अधिक है। इसके अतिरिक्त महापुरुष योग, महाभाग्य योग, सूर्य एवं चन्द्र से निर्मित योगों को भी भी सम्मिलित नहीं किया गया है।

7. धन योगों का आकलन केवल जन्मकुंडली पर ही आधारित है। उसकी पुष्टि नवांश से नहीं की गयी है।

8. कई बार जातक ऐसी नौकरी में होता है जहाँ पर अधीनता का भाव नहीं होता और जातक पूर्ण रूप से कार्य करने में स्वतंत्र होता है। जातक को अपने गुणों जैसे, महत्वाकांक्षा, अग्रणी रहने की प्रवृत्ति, जोखिम लेने की क्षमता, स्वतंत्र निर्णय लेना आदि को दबा कर नहीं रखना पड़ता और जातक एक स्वतंत्र व्यवसायी की तरह ही कार्य करता है। इस सूक्ष्म अंतर का विश्लेषण इस शोध के अंतर्गत नहीं किया जा रहा है।

9. ग्रहों, भावेशों और कारकों का आकलन करते समय उनकी बाल्यादि अवस्थाओं का आकलन नहीं किया गया है क्योंकि उसका सम्बन्ध फल की मात्रा से होता है।

10. आकलन में जन्मकुंडली को ही आधार माना गया है और ग्रहों की स्थिति का भाव-मध्य के अनुसार आकलन नहीं किया गया है क्योंकि कौन सी भाव-मध्य पद्धति अधिक सटीक है उसपर मतान्तर हैं।

11. इस शोध के अंतर्गत सभी प्रकार के व्यवसायियों को एक ही श्रेणी में रखा गया है, चाहे वे सामान्य व्यवसायी हों या देश के सफलतम उधोगपति।

12. विश्व के सभी व्यवसायियों की कुंडली का कोई एकल डाटाबेस नहीं है इसीलिए इस शोध में असम्भाव्यता निदर्शन (Non & Probability Sampling) विधि अपनाई गयी।

4. सारांश एवं निष्कर्ष

4.1 सारांश

शोध के दौरान एकत्रित सभी आंकड़ों के ज्योतिषीय विश्लेषण के पश्चात् यह निर्णय लिया गया कि कौन-कौन सी परिकल्पनाएं सिद्ध हो रही हैं।

व्यवसायियों के सभी आंकड़ों के आकलन का सार निम्न सारणी में प्रस्तुत है। अंक 1 सफलता दर्शाता है और अंक 0 विफलता:

Table 1: **कुल परिणाम - व्यवसायी**

	P1	P2	P3	P4	P5	P6	P7	P8	P9	P10	P11	P12	P13	P14
Case-001	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-002	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1
Case-003	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-004	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-005	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	1	1
Case-006	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1
Case-007	1	1	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1
Case-008	1	1	1	1	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1
Case-009	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	1

	P1	P2	P3	P4	P5	P6	P7	P8	P9	P10	P11	P12	P13	P14
Case-010	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-011	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1
Case-012	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1
Case-013	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-014	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1
Case-015	1	1	1	1	1	0	1	1	0	0	1	1	0	1
Case-016	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-017	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1
Case-018	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-019	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-020	1	1	1	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	1
Case-021	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-022	1	1	1	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	1
Case-023	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-024	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
Case-025	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	1
	23	**22**	**25**	**21**	**24**	**20**	**23**	**24**	**21**	**20**	**22**	**21**	**20**	**25**

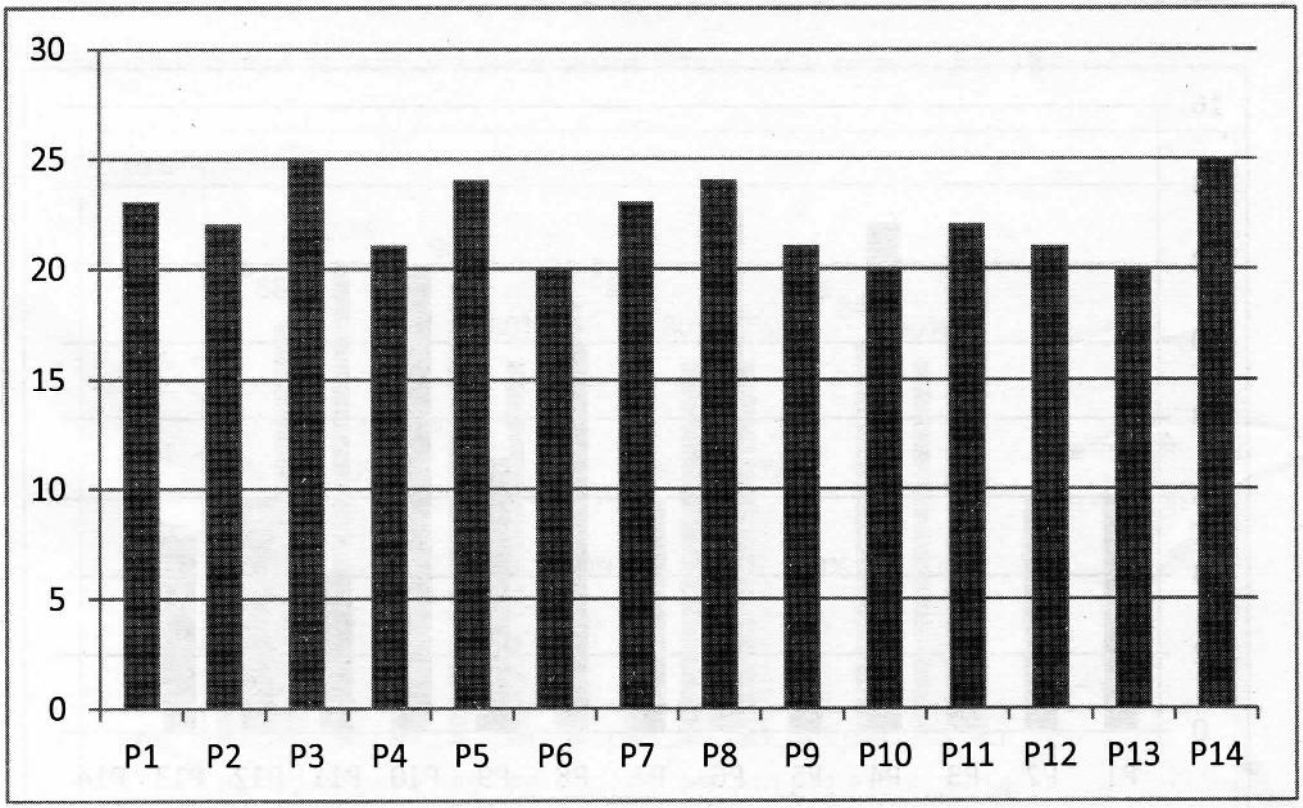

नौकरीपेशा जातकों के सभी आंकड़ों का सार निम्न सारणी में प्रस्तुत है :

Table 2: **कुल परिणाम – नौकरीपेशा**

	P1	P2	P3	P4	P5	P6	P7	P8	P9	P10	P11	P12	P13	P14
Case-001	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	0
Case-002	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	0	0	0	0
Case-003	0	1	1	1	0	1	1	1	0	0	0	0	0	0
Case-004	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0
Case-005	0	0	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0
Case-006	1	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	0
Case-007	0	1	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0
Case-008	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	1	1	0
Case-009	0	0	1	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0
Case-010	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	0	0	0
Case-011	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	1	0
Case-012	1	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	0	0	0
Case-013	0	0	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0
Case-014	0	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0
Case-015	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	0
Case-016	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0
Case-017	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0

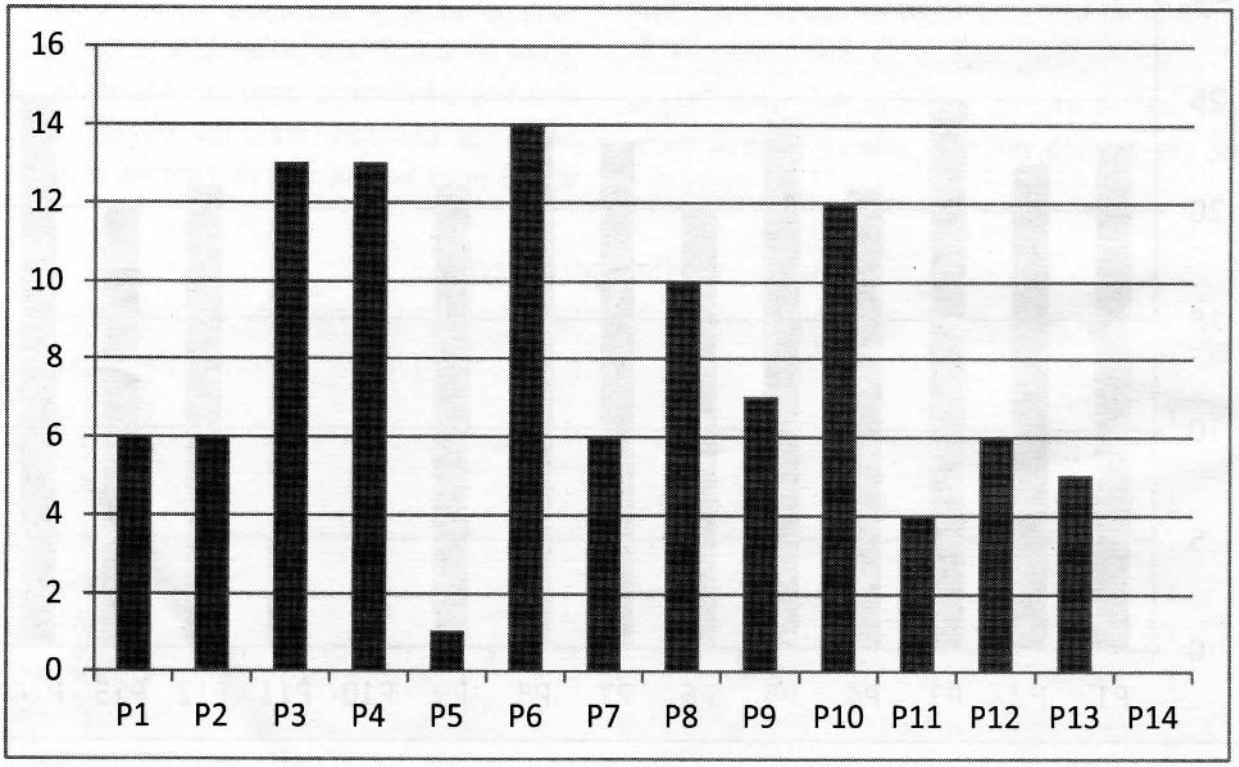

Table 3: **परिकल्पना सिद्धता प्रतिशत**

	P1	P2	P3	P4	P5	P6	P7	P8	P9	P10	P11	P12	P13	P14
व्यवसायी	92%	88%	100%	80%	96%	80%	92%	88%	80%	80%	88%	84%	80%	100%
नौकरीपेशा	50%	30%	50%	60%	0%	30%	30%	50%	40%	50%	30%	40%	30%	0%

सभी आंकड़ों के आकलन और परिणाम को परखने के बाद यह निष्कर्ष निकला कि शोध-विषय में प्रारम्भ में जो 14 परिकल्पनाएं निर्धारित की गयी थीं उनको निम्न श्रेणी में विभाजित करके व्यवसायी बनने का फलादेश करना चाहिए :

मुख्य घटक : परिकल्पना-5 और परिकल्पना-14 सबसे महत्वपूर्ण घटक हैं जो सभी व्यवसायियों की कुंडली में उपलब्ध होंगे और नौकरीपेशा जातकों की कुंडलियों में उपलब्ध नहीं होंगे।

सहायक घटक : अगर मुख्य घटक उपलब्ध हों तो परिकल्पना 2, 6, 7, 9, 11, 12, 13 की उपलब्धता व्यवसायी बनने की पुष्टि करती है।

शेष घटक : परिकल्पना 1, 3, 4, 8, 10 के आकलन को नजरअंदाज किया जा सकता है क्योंकि यह व्यवसायी की कुंडलियों में तो होते ही हैं परन्तु 40% से अधिक नौकरीपेशा जातकों की कुंडलियों में भी होते हैं।

पीएच.डी. प्रक्रिया हेतु आलेख

Learning Vastu @ Future Point

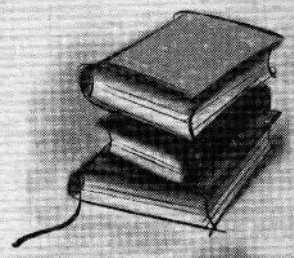

•Remedies of Domestic Vastu•Remedies of Vastu•Vastu Shastrachrya•Domestic Vastu

• सरल गृह वास्तु उ. विचार• सरल वास्तु उपाय विचार•सरल गृह वास्तु•व्यवसायिक वास्तु• फेंग सुई

Vastu Books

A comprehensive video learning series on Vastu Principles by Pt. Gopal Sharma

It covers all topics on Home, Office & Industrial vastu with remedies.

Vastu DVD

ALL INDIA FEDERATION OF ASTROLOGERS' SOCIETIES AIFAS

Speicalised courses on Vastu from All India Federation of Astrologers' Societies

•Vastu Ratna•Vastu Shastracharya •Vastu Rishi•Vastu Maharishi

Courses

FUTUREPOINT Astro Solutions

Head Office: X-35, Okhla Industrial Area, Phase-II, Delhi-110020 Ph.: 91-11-40541000-1010, 1040 Fax : 40541001
Branch Office: D-68, Hauz Khas, New Delhi-110016 Ph.: 40541020-1022 Fax : 40541021
E-mail: mail@futurepointindia.com, Web: www.futurepointindia.com